विद्यालयी पाठ्यपुस्तकों में भारत छोड़ो आंदोलन की विषय-वस्तु

गौरी श्रीवास्तव*
भारती पांडेय**

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को विद्यालयी पाठ्यपुस्तकों में एक विशेष स्थान प्राप्त है। इन पाठ्यपुस्तकों में भारतीय राष्ट्रीय संघर्ष को विभिन्न दृष्टिकोणों से दर्शाया गया है और विद्यार्थियों को स्वतंत्रता आंदोलन के विभिन्न चरणों से अवगत कराने का प्रयास किया गया है। इन पाठ्यपुस्तकों में कुछ चुनिन्दा प्रसिद्ध व्यक्तियों का वर्णन किया गया है, जिन्होंने किसी आंदोलन का नेतृत्व किया और जिनके बारे में ऐतिहासिक स्रोतों में जानकारी सरलता से मिल जाती है। जबकि वे जनसाधारण, जिन्होंने स्वतंत्रता संघर्ष के विभिन्न चरणों में भाग लिया, को एक समान संज्ञा — विद्यार्थियों, महिलाओं, पुरुषों आदि के रूप में दर्शाया गया है। वैसे तो स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले मुख्य नेताओं (पुरुष एवं महिला) का उल्लेख है, परंतु महिलाओं की अपेक्षा इन पुस्तकों में पुरुष नेताओं व आंदोलनकारियों का वर्णन अधिक है। अंग्रेज़ी उपनिवेशवाद की स्थापना से स्वतंत्रता प्राप्ति एवं विभाजन तक की गाथा का विवरण इन पुस्तकों में दिया गया है। इन पाठ्यपुस्तकों में कुछ घटनाओं/आंदोलनों का वर्णन व्यापक रूप से दिया गया है, तो कुछ को संक्षिप्त रूप में बताया गया है। स्वतंत्रता के लिए किए गए मुख्य आंदोलनों में से एक था — 'भारत छोड़ो आंदोलन' जिसमें समाज के सभी वर्गों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और अंग्रेज़ों को भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया। इस लेख में भारत के विभिन्न हिंदी-भाषी राज्यों की पाठ्यपुस्तकों में दिए गए 'भारत छोड़ो आंदोलन' की विषय-वस्तु का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

महात्मा गांधी ने 'मेरे सपनों का भारत' शीर्षक निबंध में लिखा है कि, "मैं एक ऐसे भारत के निर्माण के लिए कार्य करूँगा जिसमें निर्धनतम व्यक्ति भी ऐसा महसूस करे कि यह उसका अपना देश है, जिसके निर्माण में उसकी आवाज़ प्रभावी है, एक ऐसा भारत जिसकी जनता में न कोई उच्च वर्ग हो और न निम्न वर्ग, एक ऐसा भारत जहाँ सभी समुदाय सम्पूर्ण सौहार्द के साथ रहें। ऐसे भारत में छूआ-छूत की बुराई के लिए कोई जगह नहीं हो सकती... महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार होंगे..." हमें गांधीजी के सपनों का भारत बनाने के लिए भारत को एक 'ज्ञान समाज' के रूप में संवर्धित करने के लिए सचेत होकर काम करना होगा। हमारे समाज में 'ज्ञान' और 'विद्या' का बहुमूल्य भंडार महान

*प्रोफ़ेसर, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली – 110016
**जे.पी.एफ़., सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली – 110016

ज्ञानी विद्वानों, दार्शनिकों, वैज्ञानिकों, राजनेताओं के अतिरिक्त किसानों और हस्तशिल्पियों, कलाकारों, हमारी माताओं और दादा-दादियों तथा उस समय के लोकाचारों व लोककथाओं, महाकाव्यों एवं परंपराओं में भी सन्निहित है। भूमंडलीकरण के इस युग में हमारे पारंपरिक ज्ञान को माँजने और उसे नई अभिव्यक्ति देने की ज़रूरत है। आने वाले दशकों में सुदृढ़ 'ज्ञान समाज' ही भारत के लिए राष्ट्र समुदाय में एक आदरणीय स्थान सुनिश्चित कर सकेगा। इसमें विद्यालयी शिक्षा की अहम ज़िम्मेदारी होगी, जो विद्यार्थियों को भारत के गौरवशाली इतिहास, सामाजिक-सांस्कृतिक परम्पराओं, लोकतांत्रिक मूल्यों आदि की शिक्षा प्रदान करेगी। इस प्रकार की शिक्षा में पाठ्यपुस्तकों की एक साधन के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

देश के विभिन्न राज्यों में पढ़ाई जाने वाली पाठ्यपुस्तकों में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का उल्लेख अलग-अलग दृष्टिकोणों से देखने को मिलता है। इन पाठ्यपुस्तकों में स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न चरणों का उल्लेख है, जिसमें भारत छोड़ो आंदोलन का भी वर्णन है। भारत छोड़ो आंदोलन में मुख्य नेताओं की गिरफ़्तारी के बाद आंदोलन की कमान समाज के सामान्य जन—किसानों, हस्तशिल्पियों, कलाकारों, महिलाओं एवं युवाओं ने संभाली। इन्होंने साहसपूर्वक अंग्रेज़ी सरकार के दमन का सामना करते हुए भारत को स्वतंत्र बनाने में अपना असाधारण योगदान दिया। इस लेख में देश के विभिन्न राज्यों में पढ़ाई जाने वाली कुछ पाठ्यपुस्तकों में दिए गए भारत छोड़ो आंदोलन में योगदान देने वाले मुख्य नेताओं एवं समाज के सामान्य जनों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

राजस्थान

राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, जयपुर, की कक्षा 8 की पाठ्यपुस्तक *सामाजिक विज्ञान,* (संस्करण, 2007) के खण्ड द—'सभ्यता एवं संस्कृति' में स्वतंत्रता आंदोलन के विषय में दो पाठों का उल्लेख है, जिसमें से एक पाठ में वर्ष 1857 के बाद हुए मुख्य आंदोलनों से संबंधित घटनाओं के बारे में बताया गया है। इसी क्रम में भारत छोड़ो आंदोलन के विषय में, आंदोलन के आरंभ व ब्रिटिश सरकार द्वारा दमन के प्रयासों का वर्णन किया गया है। दूसरा पाठ राजस्थान में स्वतंत्रता आंदोलन के विषय पर आधारित है, जिसमें भारत के स्वतंत्रता संग्राम में, राजस्थान द्वारा दिए गए योगदान को लक्षित किया गया है। भारत छोड़ो आंदोलन में राजस्थान की विभिन्न रियासतों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। जोधपुर से 400 लोग जेल गए, वहीं मेवाड़ में 21 अगस्त, 1942 को माणिक्यलाल वर्मा को गिरफ़्तार कर लिया गया। उदयपुर में भी हड़ताल हुई, सभी ने अपने कारोबार बंद कर दिए तथा आंदोलन मेवाड़ के कोने-कोने तक फैल गया। जयपुर में भी आज़ादी की माँग को लेकर सभाएँ हुईं। गांधीजी के निर्देशानुसार भारत की आज़ादी के लिए जयपुर में भी स्वतंत्रता आंदोलन प्रारंभ हुआ। कोटा में 13 अगस्त को शंभूदयाल सक्सेना, मोतीलाल जैन और हीरालाल जैन गिरफ़्तार कर लिए गए, जिसके फलस्वरूप आंदोलन ने तीव्र गति पकड़ ली। युवकों ने कोतवाली पर अधिकार कर तिरंगा फहराया। महात्मा

गांधी और बड़े नेताओं के गिरफ़्तार होते ही भरतपुर प्रजा परिषद् ने 1942 में आंदोलन छेड़ दिया। राज्य में भयंकर बाढ़ आ गई, जिसके कारण जन-धन की अत्यधिक हानि हुई। अतः प्रजा परिषद् ने आंदोलन स्थगित कर राहत कार्यों में लगने का निर्णय किया। शाहपुर, बीकानेर, अलवर, जैसलमेर और बूंदी में भी जनसाधारण ने भारत छोड़ो आंदोलन में जुलूस, हड़ताल एवं रैलियों के द्वारा अपना योगदान दिया।

बिहार

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन लिमिटेड, पटना की कक्षा 8 की पाठ्यपुस्तक *अतीत से वर्तमान,* भाग-3 (संस्करण 2013–14) के अध्याय 12, 'राष्ट्रीय आंदोलन 1885–1947' में, 'भारत छोड़ो आंदोलन' के विषय में 'अंग्रेज़ों भारत छोड़ो–1942' व 'बिहार में भारत छोड़ो आंदोलन' शीर्षक के अंतर्गत चर्चा की गई है। इस पाठ में आंदोलन के विषय में सामान्य जानकारी दी गई है। बिहार में स्वतंत्रता संग्राम में लोगों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। वह आंदोलनकारी, जो ब्रिटिश पुलिसकर्मियों की गोलियों के शिकार हुए, के नामों का भी उल्लेख है, जैसे — उमाकांत सिन्हा, रामानंद सिंह, सतीश प्रसाद झा, देवीपद चौधरी, राजेंद्र सिंह, रामगोविंद सिंह और जगपति कुमार। देश के इन वीरों के सम्मान में आज़ादी के उपरांत कई स्मारक भी बनवाए गए हैं।

मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश राज्य शिक्षा केंद्र, भोपाल की कक्षा 8 की पाठ्यपुस्तक *सामाजिक विज्ञान*, (संस्करण 2011) में खण्ड 'स' के अध्याय 19 'राष्ट्रीय आंदोलन एवं स्वतंत्रता प्राप्ति' में भारत छोड़ो आंदोलन के बारे में जानकारी दी गई है। किस प्रकार आंदोलन प्रारंभ हुआ और गांधीजी का नारा 'करो या मरो' की गूँज हर दिशा से आने लगी, जनसाधारण ने आंदोलन में बड़ी संख्या में भागीदारी की—"रेल की पटरियों को तोड़ा गया और पुल, टेलीफ़ोन तथा तार लाइनों को क्षति पहुंचाई" (पृ.192)। आंदोलन को ज़ोर पकड़ता देख अंग्रेज़ी सरकार ने और कठोर दमन की नीति अपनाई। लाठीचार्ज किया गया और गोलियाँ चलाई गईं, हज़ारों की संख्या में लोगों को जेल में डाला गया।

छत्तीसगढ़

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, शंकर नगर, रायपुर, छत्तीसगढ़ की कक्षा 8 की पाठ्यपुस्तक *सामाजिक विज्ञान* (सत्र 2009–10) के इतिहास के अध्याय 6 में 'भारत छोड़ो आंदोलन' के विषय में कुछ पंक्तियों में आंदोलन से संबंधित सामान्य जानकारी दी गई है।

उत्तर प्रदेश

पाठ्यपुस्तक विभाग, शिक्षा निदेशालय (बेसिक), उत्तर प्रदेश की कक्षा 8 की पाठ्यपुस्तक *महान व्यक्तित्व के* अध्याय 31 में 'चौधरी चरण सिंह' के जीवन और 'भारत छोड़ो आंदोलन' में उनकी भागीदारी का वर्णन किया गया है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मेरठ संभाग में बगावत की बागडोर युवक चरण सिंह ने संभाली। भूमिगत रहकर उन्होंने हापुड़, मवाना, सरधना, बुलंदशहर तथा आस-पास के गाँव में क्रांतिकारियों का गुप्त संगठन बनाया। अध्याय 24 में 'सरोजनी नायडू' के व्यक्तित्व व 'भारत छोड़ो आंदोलन' में उनके योगदान का उल्लेख किया गया है। आज़ादी के संघर्ष के दौरान उन्हें कई बार जेल

जाना पड़ा। अध्याय 36 में 'लोकनायक जयप्रकाश नारायण' के विलक्षण व्यक्तित्व और उनके आज़ादी आंदोलन में योगदान को दर्शाया गया है। जयप्रकाश नारायण ने भारत छोड़ो आंदोलन में हिस्सा लेने के लिए जेल से भागने का प्रयास किया, किंतु दुर्भाग्यवश पुनः उन्हें 1943 में गिरफ्तार कर लिया गया। 1946 में वह रिहा हुए। पाठ्यपुस्तक विभाग, शिक्षा निदेशालय (बेसिक), उत्तर प्रदेश की कक्षा 8 की पुस्तक *हमारा इतिहास और नागरिक जीवन* के अध्याय 10 'अंग्रेज़ भारत छोड़ने को विवश' में भारत छोड़ो आंदोलन (1942) शीर्षक के अंतर्गत आंदोलन के आरंभ, उद्देश्य व उसमें सम्मलित लोगों के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है, जिसमें पुरुषों के साथ स्त्रियों का नाम भी उल्लिखित है। अरुणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी, राममनोहर लोहिया, बीजू पटनायक तथा आर. पी. गोयनका, चित्तू पांडेय, हेमू आदि स्वंतत्रता सेनानियों व उनके संघर्षों का विवरण इस पुस्तक के अध्याय में दिया गया है।

हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड, धर्मशाला, की कक्षा 5 की पाठ्यपुस्तक *भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास, भाग 5*, (2016) के अध्याय 4 'व्यक्तिगत सत्याग्रह से आज़ादी तक' में भारत छोड़ो आंदोलन का बहुत ही संक्षिप्त में उल्लेख किया गया है। इसमें केवल आंदोलन के प्रारंभ और दमन के विषय में ही बताया गया है। कुछ क्रांतिकारी नेताओं, जैसे— राम प्रसाद बिस्मिल, अश्फाक उल्लाह खाँ, भगत सिंह, चद्रशेखर आज़ाद आदि के नाम भी सम्मिलित हैं। स्वतंत्रता की लड़ाई में आज़ाद हिन्द फौज और सुभाष चंद्र बोस के योगदान का भी वर्णन है। सुभाष चंद्र बोस ने देश की आज़ादी के लिए बाहरी शक्तियों/देशों, जैसे— जर्मनी, जापान आदि से मदद प्राप्त करने का प्रयास किया। आज़ाद हिन्द फौज के प्रसिद्ध नारे, "जय हिन्द" और "दिल्ली चलो" का भी उल्लेख इस अध्याय में दिया गया है। अध्याय में सुभाष चंद्र बोस, आज़ाद हिन्द फौज और महात्मा गांधी के चित्रों के माध्यम से भी विद्यार्थियों के लिए स्वतंत्रता आंदोलन की एक छवि प्रस्तुत की गई है। इसके साथ ही, आज़ाद हिन्द फौज के 'युद्ध गीत' को भी इसमें स्थान प्राप्त है।

हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड, धर्मशाला की कक्षा 6 की पाठ्यपुस्तक *स्वतंत्रता संग्राम का संक्षिप्त इतिहास* (2017) में उन महान व्यक्तियों का उल्लेख है, जिन्होंने आज़ादी के संघर्ष में अपना योगदान दिया। भाग 1 में उन नायकों के संघर्ष का विवरण है जिन्होंने हिमाचल प्रदेश में स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व संभाला। इनमें से दौलतराम गुप्ता (चंबा), कामरेड परसराम (कांगड़ा) और खुशीराम गुप्ता (होशियारपुर) ने भारत छोड़ो आंदोलन का नेतृत्व किया। इसी पुस्तक के भाग 2 में भारत के अन्य स्वतंत्रता सेनानियों का वर्णन है, जिसमें सरोजनी नायडू, कुमारस्वामी कामराज और पंडित गोविंद वल्लभ पंत जैसे व्यक्तियों को सम्मिलित किया गया है।

हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड, धर्मशाला की कक्षा 7 एवं 8 की पाठ्यपुस्तकों, *स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास*, (2017) को दो खंडों में विभाजित किया गया है। खंड (क) — 'हिमाचल के गौरव' में, उन वीरों का उल्लेख है जिन्होंने स्वतंत्रता

आंदोलन के विभिन्न चरणों में हिमाचल प्रदेश में आंदोलनों का आयोजन कर अपना योगदान दिया, जैसे— ठाकुर हजारी सिन्हा, कांशीराम, पंडित संतराम 'संत', पंडित पदमदेव आदि। चंबा रियासत से, विद्यासागर ने भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान चंबा रियासत के निरंकुश शासन के विरुद्ध अभियान शुरू किया। शिमला से पंडित पदमदेव ने 1940 में व्यक्तिगत सत्याग्रह का चयन किया। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान पंडित जी को अन्य स्वाधीनता सेनानियों के साथ कैथू जेल में बंद कर दिया गया। खंड (ख)— 'देश के गौरव' में, देश के महान नायक, जैसे — नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, डॉ राजेंद्र प्रसाद, राम प्रसाद बिस्मिल आदि, जिन्होंने आज़ादी के संघर्ष के दौरान भिन्न-भिन्न आंदोलनों का नेतृत्व किया, उनके महत्वपूर्ण योगदान की चर्चा की गई है। भारत रत्न अरुणा आसफ अली की संक्षिप्त जीवनी और स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान को एक अलग अध्याय में दिया गया है। 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान ब्रिटिश पुलिसकर्मियों से बचने के लिए आसफ अली भूमिगत हो गईं। परंतु भूमिगत रहकर भी उन्होंने संघर्ष जारी रखा और मुंबई में तिरंगा फहराकर आंदोलन को सक्रियता प्रदान की।

हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड, धर्मशाला की कक्षा 10 की पाठ्यपुस्तक *स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास* (2017) में 'आज़ादी की उपलब्धि' शीर्षक के अंतर्गत भारत छोड़ो आंदोलन का उल्लेख मिलता है। सभी मुख्य नेताओं की गिरफ़्तारी के पश्चात्, जनसाधारण ने आंदोलन संभाला। विद्यार्थियों, महिलाओं एवं किसानों ने इस आंदोलन की अगुवाई की। विद्यार्थियों ने विद्यालय जाने से इनकार कर दिया, ब्रिटिश सत्ता के प्रतीक, जैसे— डाकघरों, रेलवे और पुलिस स्टेशनों पर हमले किए गए। कई स्थानों पर टेलीफ़ोन के तार काटने का प्रयास किया गया। अंग्रेज़ी सरकार द्वारा आंदोलन को दबाने के लिए कठोर दमन की नीति अपनाई गई। निहत्थे लोगों पर गोलियाँ बरसाई गईं। लाठीचार्ज किया गया, कई क्षेत्रों में सामूहिक जुर्माने आदि भी लगाए गए। आंदोलन के दौरान हुई इन सभी गतिविधियों का अध्याय में उल्लेख किया गया है।

हिमाचल प्रदेश की पाठ्यपुस्तकों में स्वतंत्रता सेनानियों (पुरुष एवं महिलाओं) के योगदान को महत्व दिया गया है। कक्षा 6–8 के सभी अध्याय स्वाधीनता संग्राम से जुड़े महान व्यक्तियों के कार्य एवं बलिदान पर केंद्रित हैं। विद्यार्थियों को हिमाचल प्रदेश और भारत के अन्य क्षेत्रों से जुड़े वीरों के योगदान से अवगत कराते हुए स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास से परिचित करने का प्रयास किया गया है।

निष्कर्ष

भारत के विभिन्न क्षेत्रों की पाठ्यपुस्तकों के अध्ययन से यह ज्ञात होता है की भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास का बहुत ही विस्तारपूर्ण विवरण विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। स्वतंत्रता से जुड़े सभी मुख्य आंदोलनों और व्यक्तित्वों का उल्लेख इन पाठ्यपुस्तकों में मिलता है। इन विवरणों के मध्य, भारत छोड़ो आंदोलन और उससे जुड़े मुख्य व्यक्तियों के योगदान की भी चर्चा की गई है। आंदोलन में जनसाधारण (महिला, पुरुष, छात्र, किसान, मज़दूर आदि) की भागीदारी पर भी प्रकाश

डाला गया है। इतिहास में विद्यार्थियों की रुचि उत्पन्न करने के लिए अध्याय को विभिन्न तरीकों से प्रस्तुत किया गया है। कुछ किताबों में संवाद के रूप में अध्याय को प्रस्तुत किया गया है। कई पृष्ठों में ऐतिहासिक स्रोतों, जैसे— चिट्ठियों को भी दर्शाया गया है। विद्यार्थियों को चित्रों के माध्यम से भी ऐतिहासिक घटनाओं और स्वतंत्रता सेनानियों से अवगत कराने का प्रयास किया गया है।

संदर्भ

उत्तर प्रदेश शिक्षा निदेशालय (बेसिक). *महान व्यक्तित्व* (कक्षा 8). पाठ्यपुस्तक विभाग, उत्तर प्रदेश शिक्षा निदेशालय (बेसिक), उत्तर प्रदेश.

बिहार राज्य सरकार. 2013–14. *अतीत से वर्तमान,* भाग-3 (कक्षा 8). बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन लिमिटेड, पटना, बिहार.

मध्य प्रदेश राज्य शिक्षा केंद्र. 2011. *सामाजिक विज्ञान* (कक्षा 8). मध्य प्रदेश राज्य शिक्षा केंद्र, भोपाल, मध्य प्रदेश.

राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल. 2007. *सामाजिक विज्ञान* (कक्षा 8). राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, जयपुर, राजस्थान.

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2009–10. *सामाजिक विज्ञान* (कक्षा 8). राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, शंकर नगर, रायपुर, छत्तीसगढ़.

हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड. 2016. *भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास,* भाग-5 (कक्षा 5). हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश.

———. 2017. *स्वतंत्रता संग्राम का संक्षिप्त इतिहास* (कक्षा 6). हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश.

———. 2017. *स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास* (कक्षा 7). हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश.

———. 2017. *स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास* (कक्षा 8). हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश.

———. 2017. *स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास* (कक्षा 10). हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश.

सिंह, बाल्मीकि प्रसाद. 2013. *हमारा भारतवर्ष.* राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. नयी दिल्ली.